A Quarterly News Letter of Maitree Jankalyan Samiti

मैत्री समूह

# Chirping Sparrow

Year - 6, Issue-I, Oct to Dec 2009

जिसकी रज में लोट–लोट कर बड़े हुए हैं,
घुटनों के बल सरक–सरक कर खड़े हुए हैं।
परम हंस सम बाल्य काल में सब सुख पाए,
जिसके कारण धूल भरे हीरे कहलाए।
हम खेले–कूदे हर्ष–युत जिसकी प्यारी गोद में
हे मातृभूमि! तुझको निरख मग्न क्यों न हों मोद में।

पाकर तुझसे सभी सुखों को हमने भोगा।
तेरा प्रत्युपकार कभी क्या हमसे होगा।
मेरी ही यह देह तुझी से बनी हुई है।
बस तेरे ही सुरस सार में सनी हुई है।
फिर अंत समय तू ही इसे अचल देख अपनायेगी।
हे मातृभूमि! यह अंत में तुझ में ही मिल जाएगी।

*- मैथिलीशरण गुप्त*

26 जनवरी
गणतंत्र दिवस

# Pride of Society

**Dr. Anil Jain**

Born in a small village in Agra district, Dr. Anil Jain today is a well known name among scholars for his research articles and social contributions. Throughout his academics he was an outstanding student and was even offered a seat in Roorkee Engineering College (now IIT Roorke). Following his passion in physics he did his doctoral studies in physics and took up teaching despite several other lucrative offers. His father was a learned scholar of Jainism and had a lot of influence on him. He later joined ONGC and worked there for over 24 years. From his first article in 1984 he has published over 200 research articles on various socio-religious subjects. He is the author of two famous books including the book with several accolades "Jeevan Kya Hai"(What is Life?). The book was conferred "KunKund Gyanpeeth Award". He has also received the "Arhat Vachan Puraskar" for his research articles. He has given talks in various seminars on subjects involving social and religious issues. He follows moral values strictly and has been quite active in social activities. He currently works for an Oil major in Kuwait and spends time on writing and research.

**aniljain45@hotmail.com**

## Young Achievers

**Anil V. Jain**
Tikamgarh
M.Sc. Physics
Selected in UP. PCS
Commercial Tax Officer

**Kush U Shah**
Ahemdabad
First Year PGP Student, IIM Bangalore
Selected for summer internship at Goldman Sachs
B. Tech. Chemical Engineering, IIT Kanpur
94.2% XII CBSE 2003, Gujarat State Rank 5
AIEEE 2003 - All India Rank 415, Gujarat State Rank 3

Chirping Sparrow
Year - 6, Issue - I

Chirping Sparrow is published quarterly by the
**Maitree Jankalyan Samiti** 1/205, Professor Colony, Agra-282 002
E-mail : maitreesamooh@hotmail.com,
Website : www.chirpingsparrow.com, www.maitreesamooh.com
Mob.: 94254-24984
It is circulated to all Young Jaina Awardees
and friends of **Maitree Jankalyan Samiti.**

# जिनपूजा

अभिषेक और पूजा जिनत्व के अत्यन्त समीप आने का उपक्रम है। जिनालय मानों एक आध्यात्मिक प्रयोगशाला है जहां जिनबिंब के सम्मुख जाकर हम अभिषेक और पूजन के द्वारा स्वयं को निर्मल बनाने का प्रयोग करते हैं। अभिषेक को पूजा का एक अंग माना गया है। अभिषेक पूर्वक ही पूजा सम्पन्न होती है। प्रासुक जल की धारा जिनबिंब के ऊपर इस तरह प्रवाहित करना जिससे कि जिनबिंब पूरी तरह अभिसिंचित हो सके– यह अभिषेक कहलाता है। जैनाचार्यों ने चार तरह के अभिषेक का उल्लेख किया है– जन्माभिषेक, राज्याभिषेक, दीक्षाभिषेक, चतुर्थाभिषेक या प्रतिमाभिषेक। तीर्थंकर बालक को सुमेरुपर्वत पर स्थित पाण्डुक शिला पर ले जाकर जब क्षीरसागर के जल से अभिसिंचित किया जाता है, वह जन्माभिषेक कहलाता है। तीर्थंकर कुमार का राजतिलक के अवसर पर जो अभिषेक किया जाता है वह राज्याभिषेक कहलाता है। जिनदीक्षा लेने से पूर्व तीर्थंकर का जो अभिषेक किया जाता है वह दीक्षाभिषेक कहलाता है।

विधि–विधान पूर्वक प्रतिष्ठित जिनबिंब का अभिषेक करना चतुर्थाभिषेक या प्रतिमाभिषेक कहलाता है। प्रतिदिन पूजन से पूर्व जो जिनबिंब का अभिषेक होता है वह चतुर्थाभिषेक या प्रतिमाभिषेक है। अभिषेक की परम्परा अनादि–निधन है। चतुर्निकाय के देव अष्टाह्निका पर्व में नन्दीश्वर द्वीप में जाकर चारों दिशाओं के अकृत्रिम चैत्यालयों में क्रमशः दो–दो प्रहर करके चौबीसों घंटे भगवान का अभिषेक एवं पूजन करते हैं। यह बात बड़ी महत्त्वपूर्ण है कि सौधर्म आदि इन्द्र और सभी देवगण विदेह क्षेत्र में सदा विद्यमान रहने वाले तीर्थंकरों के कल्याणक एवं साक्षात दर्शन का सौभाग्य प्राप्त होने पर भी अकृत्रिम चैत्यालयों में भक्तिभाव से अभिषेक करने जाते हैं और स्वयं को धन्य मानते हैं।

असल में, अभिषेक के दौरान जिनबिंब के अत्यंत निकट आने और भाव–विभोर होकर भगवान का स्पर्श करने का सुखद अवसर प्राप्त होता है जिससे भावों में बड़ी निर्मलता आती है, मन गद्गद् हो जाता है और जीवन की सार्थकता मालूम पड़ती है। अभिषेक का उद्देश्य बताते हुए लिखा गया है कि हे भगवन्! आप सहज ही परम पवित्र हैं, आपकी पवित्रता के लिए मैंने अभिषेक नहीं किया। मैंने तो स्वयं को रागद्वेष रूप मलिनता से मुक्त करने के लिए आपके पवित्र बिंब पर जलधारा प्रवाहित की है और क्षणभर को समस्त पापाचरण छोड़ करके मानों आपका साक्षात् स्पर्श करने का पुण्य अर्जित किया है। इस तरह अभिषेक आत्म–निर्मलता के लिए किया गया एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण अनुष्ठान है। अभिषेक के दौरान उच्चारित मंत्रों से भक्ति और जिनबिंब के स्पर्श से पवित्र हुआ सुगंधित जल गन्धोदक कहलाता है – जिसे अपने संचित पापों का क्षय करने की उत्तम भावना से नेत्र और ललाट पर धारण किया जाता है। जिनपूजा गहन आत्मीयता से भरकर अपने श्रद्धेय के प्रति आदर–सम्मान प्रकट करने का एक सुखद अवसर (Occasion या Chance) है। वह काम, क्रोध, लोभ आदि विकारी भावों से चेतना को मुक्त करने की एक प्रक्रिया (Process) है। वह त्याग और संयम के सूप (sieve) द्वारा व्यर्थ पदार्थों को फटकारकर अलग करने और सारभूत तत्व को ग्रहण करने की कीमिया (Alchemi) है। पूजा हमारी आन्तरिक पवित्रता को उद्घाटित करने का अनुष्ठान है। पूजा की प्रक्रिया दो तरह से सम्पन्न होती है, द्रव्य और भाव रूप से। जल, चंदन आदि पवित्र अष्ट द्रव्य द्वारा जिनेन्द्र भगवान की भक्ति करना द्रव्यपूजा कहलाती है और अशुभ प्रवृत्ति को रोककर जिनेन्द्र भगवान का गुणगान करना भावपूजा है।

पूजा करते समय ही नहीं बल्कि पूजा के उपरान्त भी दिनभर मन, वाणी और कर्म में पवित्रता बनी रहे यही पूजा का उद्देश्य है। पूजा को वैयावृत्य या सेवा भी कहा गया है। भगवान के समान गुणों को प्राप्त करने की भावना रखना ही भगवान की सच्ची सेवा है। अतः पूजा के दौरान भगवान के समान बनने की भावना रखनी चाहिए। श्रावक स्वयं भोजन करने से पूर्व पूजा के योग्य सामग्री तैयार

करके जिनबिंब के सम्मुख अर्पित करता है। इसलिए पूजा को श्रावक के अतिथि संविभाग नामक व्रत के अंतर्गत रखा गया है। पूजा करते समय हम पांच–पांपों से मुक्त होकर पंचपरमेष्ठी के गुणगान में लीन हो जाते हैं इसलिए पूजा को श्रावक के सामायिक नामक शिक्षाव्रत में भी शामिल किया गया हैं। पूजा करते समय हम एकाग्रचित्त होकर पंचपरमेष्ठी वाचक विभिन्न पदों (मंत्रों) के माध्यम से भगवान जिनेन्द्र के स्वरूप का स्मरण करते हैं इसलिए पूजा एक तरह का पदस्थ ध्यान भी है। पूजा के दौरान चूंकि सच्चे देव–शास्त्र–गुरू के स्वरूप का चिंतवन और अपना आत्मावलोकन दोनों साथ चलते रहते हैं अतः पूजा को स्वाध्याय भी कहा गया है। इस तरह पूजा आत्म–विकास में सहयोगी अनेक गुणों का समन्वित रूप है। अधिक समय तक एकाग्र होकर मंत्र का जाप करना कठिन है लेकिन भाव–भक्ति से तन्मय होकर जिनबिंब के सम्मुख दीर्घकाल तक पूजा करना आसान है। इसलिए सद्‌गृहस्थ को अशुभ कार्यों से बचाकर अधिक समय तक धर्मध्यान में लगाए रखने में जिनपूजा अत्यंत सहायक है। पूजा के दौरान जिनबिंब के सम्मुख अष्ट–द्रव्य समर्पित किए जाते हैं। सर्वप्रथम भरत चक्रवर्ती ने भगवान ऋषभदेव की पूजा अष्ट–द्रव्य से की थी–ऐसा उल्लेख मिलता है। भगवान का गुणगान करते हुए सजगतापूर्वक क्रम–क्रम से एक–एक द्रव्य समर्पित करने से मन, वाणी और तन तीनों को शुभ कार्य में व्यस्त रखना आसान हो जाता है। अतः अष्ट द्रव्य का महत्त्व स्वतः सिद्ध है। अष्ट कर्म से मुक्त होने की पवित्र भावना से अष्ट द्रव्य अर्पित किए जाते हैं।

सर्वप्रथम हम भगवान के श्रीचरणों में जल अर्पित करते हैं। जल को ज्ञान का प्रतीक माना गया है। सम्यग्ज्ञान के अभाव में जीव संसार में जन्म–मरण की पीड़ा पाता है। अतः जल अर्पित करना सम्यकज्ञान की प्राप्ति और जन्म–मरण की पीड़ा से मुक्त होने की भावना का सूचक है। जल से एक व्यावहारिक संदेश यह भी मिलता है कि हम सभी जीवों के साथ मिलजुल कर रहना सीखें। जल की तरह तरल, निर्मल और गतिशील बनें।

जल के उपरांत चंदन अर्पित करने का अवसर आता है। चंदन शीतलता का प्रतीक है। शीतलनाथ भगवान की स्तुति करते हुए आचार्य समन्तभद्र स्वामी कहते हैं कि हे भगवन्! संसार में चंदन, चांदनी, गंगाजल, मणिमय हार आदि शीतलता प्रदान करने वाले माने गए हैं पर वास्तव में आपके निर्दोष पापरहित वचन ही शीतल हैं, जो जीव को संसार के संताप से सदा के लिए मुक्त करने वाले हैं। अत : चंदन अर्पित करने का पवित्र उद्‌देश्य यही होना चाहिए कि हमें भगवान की वाणी का समागम मिले जिससे हमारी श्रद्धा की आंख खुले, हमें आत्मदर्शन / स्वसंवेदन हो और हम दर्शनावरणीय कर्म को नष्ट करके संसार परिभ्रमण के संताप को शान्त कर सकें। चंदन चढ़ाने से एक व्यवहारिक संदेश यह भी मिलता है कि हम शोक संतप्त दुखी जीवों को अपने तन, मन और वाणी के द्वारा शीतलता पहुंचाने का प्रयत्न करें। सभी के प्रति हार्दिक और सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार बनाए रखें।

अब क्रम आता है अक्षत चढ़ाने का। अक्षत को अखंडता का प्रतीक माना गया है। हम अक्षत अर्पित करके अखंड या अव्याबाध–सुख पाने की भावना व्यक्त करते हैं। यह अव्याबाध–सुख हमें वेदनीय कर्म के अभाव में प्राप्त हो सकता है इसलिए अक्षत अर्पित करने का मंगल उद्‌देश्य वेदनीय कर्म जनित सांसारिक सुख–दुख में समता रखते हुए जीवन जीना भी है। सामान्यत : धुले हुए स्वच्छ और अखंड चावलों में अक्षत की कल्पना करके हम भगवान के सम्मुख चढ़ाते हैं। अतः चावल की स्वच्छता या उज्ज्वलता हमें एक व्यवहारिक संदेश देती है कि हम अपने जीवन को साफ–सुथरा और उज्ज्वल बनाएं। सुख–दुख के अवसर आने पर मन को अहंकार और संक्लेश से मलिन न होने दें।

अक्षत के उपरांत पुष्प अर्पित किए जाते हैं। पुष्प को काम–वासना का प्रतीक माना जाता है। काम–वासना मोहजनित है। अतः पुष्प समर्पित कर हम मोहजनित काम–वासना को मिटाने की भावना व्यक्त करते हैं। पुष्प अर्पित करते समय एक व्यवहारिक संदेश यह भी ले सकते हैं कि हमारा जीवन फूलों की तरह कोमल, सुंदर और सुगंधित बने। फूलों का जीवन अत्यंत अल्प होता है फिर उन्हें मुरझाना और टूटकर गिर जाना होता हैं। इसी तरह हमारा जीवन भी थोड़ा है और एक दिन यह समाप्त हो जाएगा। जीवन की सार्थकता यही है कि हम जीवन को आत्म–कल्याण और लोक–कल्याण के कार्य में लगाएं।

*शेष अगले अंक में ...*

Read similar articles at http://www.chirpingsparrow.com/tat/tat_june_2009.html

# आपके प्रश्न

*Q. क्या मनुष्य मरने के बाद नियम से 84 लाख योनियों में भटकने के बाद ही मनुष्य जन्म पाता है ?*

***प्रियंक मंडल, गुना***

*A.* एक गति से दूसरी गति में जाना हमारे द्वारा किए गए परिणामों पर निर्भर है न कि ऐसे किसी नियम पर। हम अच्छे बुरे परिणामों से क्रमशः ऊंची या नीची गति को प्राप्त कर सकते हैं, कुल 84 लाख योनियाँ हैं जहां जीव जन्म लेता है, एक Circle पूरा करना पड़े ऐसा नियम नहीं है।

*Q. हमें यह कैसे पता चले की हमने किस गति का बंध कर लिया है।*

***प्रियंक मंडल, गुना***

*A.* हमने किस गति का बंध कर लिया है accurately यह तो केवल तीर्थकर भगवान ही बता सकते हैं पर आचार्यो ने कुछ सामान्य बातें बताई हैं, जिनके द्वारा हम अनुमान लगा सकते हैं कि हमने किस गति का बंध कर लिया है या करेंगे।

• यदि मैं बहुत अधिक आरम्भ एवं परिग्रह करूंगा तो मैं नरक गति का बंध करूंगा, बहुत अधिक पाप के कार्य करना आरम्भ एवं बहुत अधिक ममत्व (Possessiveness) रखना परिग्रह कहलाता है।

• मायाचारी करने से तिर्यंच गति का बंध होता है, मायाचारी के मायने हैं दिखावा, प्रदर्शन अर्थात् जो जैसा है वैसा न होकर कुछ और ही होना।

• यदि मैं अल्प आरम्भ एवं अल्प परिग्रह पूर्वक अर्थात संतोष पूर्वक जीवन जीऊंगा तो मैं मनुष्य गति का बंध करूंगा, साथ ही स्वभाव की मृदुता / कोमलता / सरलता से मनुष्य गति का बंध होता है।

• दृष्टि की निर्मलता के साथ यदि हम अपने जीवन को नियंत्रित और संयमित कर लेते हैं तो हमें देव गति का बंध होगा। असल में ऐसा है कि हम जिस तरह यहां जीते हैं उसी तरह आगे के जीने के लिए भी हम तैयारी कर लेते हैं, यहाँ कोई प्रेम / शांति से जीता है तो मानियेगा उसे ऐसी गति मिलेगी जहाँ वह शांति से जी सके और यदि कोई कलुषता, तेरे–मेरे भाव, शोषण प्रवृत्ति, दूसरे के दुख में हर्ष महसूस करने की प्रवृत्ति के साथ जी रहा है तो उसे नीच गति का ही बंध होगा।

*Q. बहुबीजी फलों का निषेध है जैसे कि बैंगन, फिर हम अमरूद, तरबूज, भिण्डी, टमाटर आदि का सेवन क्यों करते हैं ?*

***अंशु जैन, विदिशा***

*A.* बहुबीजी के मायने यह है ही नहीं, अपन ने अपने मन की व्याख्या कर ली है। बहुबीजी तो वो है जिसमें की बीज तो बहुत हो और गूदा कोई काम का न हो, जैसे कि सीताफल। सीताफल खाने से पहले तौल लो और फिर खाने के बाद जितना कचरा बचा वो तौल लो तो पता लगेगा कि भीतर 50% गया बाकी सब बाहर ही रह गया। इतने सारे बीज मिटाए, इतना फल नष्ट किया और उसमें सैकड़ों बीज खराब हुए। और पपीता, इसमें एक किनारे पर बीज हैं। एक किनारे के बीज अलग किये पूरा पपीता खाने लायक हो गया, पपीते को बहुबीजी किसी आचार्य भगवंत ने नहीं कहा, किसी ने मान लिया हो तो मान लिया हो, अपने घर की किताब लिख लो उसमें कोई हर्जा नहीं है, लेकिन आचार्यों की लिखी किताब में तो कहीं नहीं है कि पपीता बहुबीजी है। ऐसे तो भिण्डी है, गिलकी है, लौकी है, सभी बहुबीजी हो गए। लौकी रोज़ खाते हैं उसमें कितने बीज हैं, लेकिन उसके बीज अलग कर देने के बाद भी गूदा इतनी मात्रा में है कि वह Waste नहीं हुआ। और वे बीज कच्ची अवस्था में हैं, उन्हें बो देने पर उनसे कोई पेड़ नहीं उगता है, इसलिए योनि को सचित्त करके नष्ट करने का भी दोष नहीं लगा। अगर आप और

# आपके प्रश्न

ज्यादा सैद्धांतिक रूप से पूछें तो 'योनि को सचित्त करने' का मतलब है– जिसमें जीव पैदा होने की सम्भावना थी, उसे आपने destroy कर दिया। जब बीज पक जाए और उसमें पौधे को पैदा करने की सामर्थ आ जाए, ऐसे बीज की क्षति करो तो दोष है, लेकिन वैसे वाले अवस्था में ये बीज नही हैं इसलिए यह सब खाते हैं। तरबूज अलग चीज़ है, तरबूज बहुबीजी में नहीं आता है। वह पानी वाला बड़ा फल है और उसके भीतर बहुत जल्दी oxidation भी होता है इसलिए जब आप उसको बनायेंगे तो वातावरण की oxygen को ग्रहण करके जीव राशि उत्पन्न होना शुरू हो जाएगी। थोड़ा सा भी उसमें नमक डाल करके आप जरा सा रख दो फिर उसके बाद में microscope की जरूरत नहीं है, ऐसे ही सामने–सामने देखने में आ जाएगी जीव राशि। भिण्डी के साथ में एक problem यह है कि भिण्डी में कहां कोई इल्ली बगैरह बैठी हो, सभी में होती है ऐसा नहीं है आप नहीं खाएं यह अच्छी चीज है, लेकिन अभक्ष्य भी नहीं है। टमाटर अपने यहां पर अभक्ष्य नहीं है, आचार्य महाराज ने तो टमाटर को अभक्ष्य नहीं माना है। पर कई लोग इसका रंग लाल होने का logic देते हैं। पर लाल मिर्ची खा लेंगे, आलूबुखारा खा लेंगे वो लाल रंग का, लेकिन टमाटर नहीं खायेंगे। यह कोई logic नहीं है। उसमें बहुत सारे बीज होते हैं वो बीज खाए जाते हैं पूरे के पूरे, उन बीजों को भी हटा दो अगर, तब भी दल होता है अधिक मात्रा में इसलिए उसको बहुबीजी के cadre में नहीं रखा। आप नहीं खाओ यह बहुत अच्छी चीज़ है, मैं कहाँ कह रहा हूँ कि आप खाओ। ज़ितनी कम से कम खाओ बहुत अच्छा लेकिन अभक्ष्य मत कहो क्योंकि आचार्यों ने उसे अभक्ष्य नहीं कहा। बैंगन को अभक्ष्य कहा है। देखना बैंगन की जो position है और अनार को। अनार में कितने बीज होते हैं और लाल रंग का होता है वो और उसका रस तो बिल्कुल red होता है अब करो क्या करना है red का, और बीज भी इतने सारे। लेकिन आप देखेंगे की हर एक बीज के ऊपर एक कवच है, अपने आप में एक individual फल है वो और अन्नानास में, बैंगन में एक बीज और दूसरे बीज के बीच में कोई dividation line कोई membrane नहीं होती लेकिन अनार के बीच में एक कवच होता है। हर एक बीज में एक कवच होता है, हर एक बीज एक अलग कवच से लिपटा हुआ है वो अपने आप में individual है इसलिए उसमें बहुबीजी का दोष नहीं है, लेकिन बैंगन में सब उसके दल के साथ में compact हैं। और जब Galvanometer लगाकर के बैंगन को देखा तो सबसे ज्यादा deflections उसमें आए। सबसे ज्यादा जीवनी शक्ति उसमें है यह science में प्रयोग किया है इसलिए हमारे यहां अभक्ष्य में बैंगन को रख दिया। और बैंगन के साथ यह है कि जहां उसका डंठल लगा रहता है उसमें उसके उन चार सिरों में से किसी भी एक के नीचे हल्का सा छेद होगा उसमें से चार इन्द्रिय जीव छोटे से बैंगन में जब प्रवेश करता है तब वो जाकर के ferment करता है। इस तरह पूरा बैंगन इतना बड़ा होता है उस चार इन्द्रिय जीव की वजह से, इसलिए अपने यहां पर बैंगन का निषेध है –यह science है। अगर सीधा आपने उसे आग में डालकर के पकने रख दिया तो फिर तो कुछ रहा ही नहीं! आप यदि उसे बनायें भी तो बाहर से देखने पर पता लगाना बहुत मुश्किल है कि कहाँ जीव है ? और भी उसकी सब्जी ज़रा देखें अपन कैसी मालूम पड़ती है, कटहल की सब्जी कैसी मालूम पड़ती है, कटहल अपने आप में कैसा मालूम पड़ता है, तो यह भी देखना आवश्यक होता है, अभक्ष्य इन सब वजहों से होता है। इसलिए सबसे अच्छा यह है कि अपन तो अपना जीवन चलने के लिए भैया दो चार दस चीजें चुन लेवें और उन्हीं में जीवन चला लेवें । क्या फायदा जितनी ज्यादा चीजें चुनेंगे उतना ज्यादा उसमें विचार करना पड़ेगा।

***Q. How do you cope with cold weather, hot sun and rain when you are travelling naked?***

*A.* In Jain philosophy, it is believed that the feeling of pain happens in direct proportion to the inner attachment that one has with his body. A Digamber monk practices to remain detached with his body. He does not try to collect any articles for comfort of his body. In the event of any adverse circumstances, he faces happily all such circumstances with his eternal powers and detachment. Even after being under state of nudity, with such rigorous practices of maintaining equanimity, his power of resistance gradually increases and he builds up abilities to maintain equanimity and tolerate peacefully the hot sun, shivering colds and pouring rains.

यदि आपकी कोई शंका या प्रश्न है, तो हमें लिख भेजिये। मुनिश्री द्वारा उसका उत्तर दिया जाकर शंका का समाधान किया जायेगा। –सम्पादक

Access online repository of previous Q & As at http://www.chirpingsparrow.com/qandans/qandans_june_2009.html

# अपनी बात

**प्रिय अवार्डीज,**

भारत की राजधानी दिल्ली की भीड़ भरी सड़कें। उसमें भी बी.आर.टी. रोड पर सबसे ज्यादा ट्रैफिक रहता है, जिसको दिल्ली का चिराग कहा जाता है। उसी रेड लाईट के पास एक बच्चा बहुत सारे तिरंगे झण्डे हाथ में लेकर जोर–जोर आवाज लगा रहा था – बाबूजी कम से कम एक झण्डा तो खरीद लो, कल 26 जनवरी है। आने–जाने वाली कारों के पास जाकर चिपक जाता और उसमें बैठे लोंगों से हाथ जोड़कर आग्रह करता – बाबूजी तिरंगा ले लो, आपकी गाड़ी में बहुत अच्छा लगेगा।

अचानक एक कार में बैठे बाबूजी को उसके इस आग्रह पर गुस्सा आ जाता है। वह कार के दरवाजे को तेजी से धक्का देकर खोलते हैं और बच्चे को मारने का प्रयास करते हैं। धक्के से बच्चा सड़क पर जा गिरता है जिससे उसके सिर पर चोट लगती है। इतने में ग्रीन लाईट हो जाती है वह कार मालिक बाबूजी तेजी से अपनी गाड़ी में बैठकर चले जाते है। ग्रीन लाईट की आपा–धापी में सड़क पर गिरे विजय के दाहिने पैर पर से एक कार गुजर जाती है। विजय को स्कूल में तिरंगे के महत्व के बारे में पढ़ाया गया था, इसलिए उसे तिरंगे का महत्त्व पता था। केसरिया रंग शहादत का प्रतीक है, सफेद रंग सादगी तथा हरा रंग हरियाली का। उसके मास्टर जी ने यह भी कहा था कि यह ''आजादी'' शहीदों ने हमें भेंट में दी है लेकिन इसका महत्त्व हमें नहीं मालूम। जब तुम शहीदों की शहादत के बारे में जानोगे तभी आजादी महत्त्व मालूम हो पाएगा। विजय दिन में स्कूल जाता था और शाम को लालबत्ती पर हर मौसम के, हर रंग के सामान बेचता था। जब उसे होश आता है तो वह देखता है कि उसके सिर पर चोट लगी है और उसका एक पांव भी नहीं है। उसको बार–बार मास्टर जी का बताया केसरिया रंग का महत्त्व याद आ रहा है।

26 जनवरी, गणतंत्र दिवस हमारा राष्ट्रीय पर्व है। हम सब राष्ट्रीय गीत, राष्ट्रीय गान, राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रीय प्रतीक चिन्ह इन सबके महत्व के बारे में यहां तक की राष्ट्रीयता के बारे में न चर्चा करना चाहते हैं न इन सबका सम्मान करना चाहते हैं।

पर हम भूल जाते हैं कि यह ''आजादी'' शहीदों ने हमें भेंट में दी है, आजादी का रंग केसरिया होता है। आइये, हम प्रयास करें कि हम हमेशा राष्ट्रीय गीत, राष्ट्रीय गान, राष्ट्रीय ध्वज का सम्मान करेंगे। अपने सभी कार्यों को राष्ट्रीयता की भावना से करेंगे। कोई भी ऐसा कार्य नहीं करेंगे कि जिससे हमारे देश और हमारे भाई–बहनों को नुकसान पहुंचे। हम अपनी ''आजादी'' का सम्मान करेंगे। उन शहीदों का सम्मान करेंगें जिन्होंनें अपनी शहादत देकर हमें यह अनमोल आजादी दी है और उसका महत्त्व कभी न कभी हम जरूर जानेंगे।

श्री अनिल विक्रम जैन (एम.एस.सी. फिजिक्स) वर्तमान में इलाहाबाद में कमर्शियल टेक्स ऑफिसर के पद पर कार्य कर रहे हैं। आपका चयन उत्तरप्रदेश लोक आयोग सेवा के माध्यम से हुआ है। मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश लोक सेवा आयोग, आई.ए.एस. आदि की तैयारी करने वाले विद्यार्थी को मार्गदर्शन एवं मदद देने हेतु उत्सुक हैं। आपसे 09389085551 नम्बर पर सम्पर्क करें। पत्राचार हेतु पता–श्री अनिल विक्रम जैन, द्वारा श्री ए.के.द्विवेदी, एच.आई.जी.– 13, कमला नगर, इलाहाबाद उत्तरप्रदेश। इस हेतु आप मैत्री समूह से भी सम्पर्क कर सकते हैं।

## *Work Life Balance*

A Speech by Bryan Dyson (CEO, Coca Cola)

Imagine life as a game in which you are juggling some five balls in the air. You name them - Work, Family, Health, Friends and Spirit and you're keeping all of these in the Air. You will soon understand that work is a rubber ball. If you drop it, it will bounce back.

But the other four Balls - Family, Health, Friends and Spirit - are made of glass. If you drop one of these; they will be irrevocably scuffed, marked, nicked, damaged or even shattered. They will never be the same. You must understand that and strive for it.

***Compiled by Prerak Shah***

A long way off, across the ocean, there is a little country where the ground is lower than the level of the sea, instead of higher, as it is here. The people there build great, thick walls all round the country, and the walls keep the sea out. Any accident to one of the walls is a terrible thing. These walls are really great banks, as wide as roads, and they are called "dikes."

Once there was a little boy who lived in that country, whose name was Hans. One day, he took his little brother out to play. They went a long way out of the town, and came to where there were no houses, but green fields and the 'dikes'. By-and-by, Hans climbed up on the dike, and sat down; the little brother was playing about at the foot of the bank. Suddenly the little brother called out, "Oh, what a funny little hole! It bubbles!"

"Hole? Where?" said Hans. "Here in the bank," said the little brother.

There was the tiniest little hole in the bank. Just an air-hole. A drop of water bubbled slowly through it. Hans looked all round; not a person or a house in sight. He looked at the hole; the little drops oozed steadily through; he knew that the water would soon break a great gap, because that tiny hole gave it a chance. The town was so far away--if they ran for help it would be too late; what should he do? Once more he looked; the hole was larger, now, and the water was trickling. Suddenly a thought came to Hans. He stuck his little forefinger right into the hole, where it fitted tight; and he said to his little brother, "Run, Dieting! Go to the town and tell the men there's a hole in the dike. Tell them I will keep it stopped till they get here." The little brother knew by Hans' face that something very serious was the matter, and he started for the town, as fast as his legs could run.

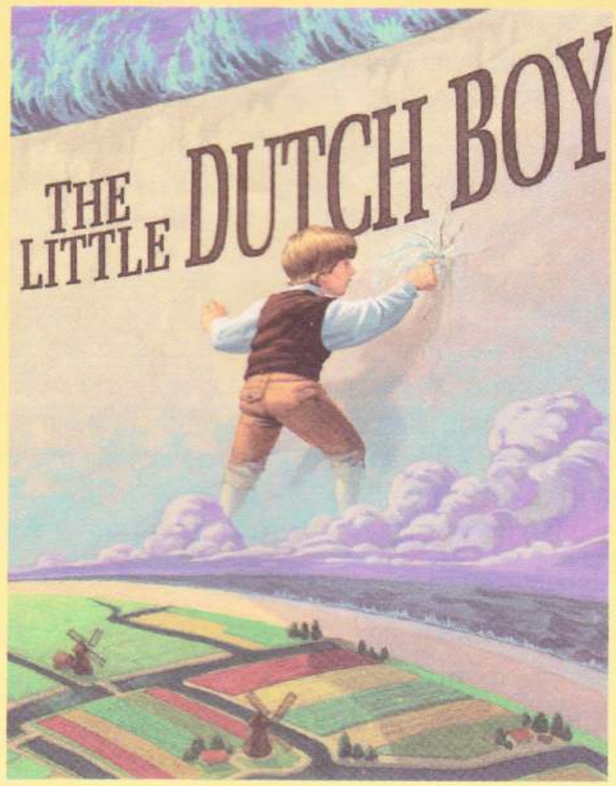


Hans could hear the water, slap, slap, slap, on the stones; and deep down under the slapping was a gurgling, rumbling sound. It seemed very near. By-and-by, his hand began to feel numb. He rubbed it with the other hand; but it got colder and more numb, colder and more numb, every minute. He looked to see if the men were coming; the road was bare as far as he could see. Then the cold began creeping, creeping, up his arm; his arm to the shoulder; how cold it was! And soon it began to ache a lot. It seemed hours since the little brother went away. He felt very lonely, and the hurt in his arm grew and grew. He watched the road with all his eyes, but no one came in sight. Tired, he leaned his head against the dike, to rest his shoulder.

Hans' heart beat in heavy knocks. Would they never come? He was frightened.

After a long wait, he heard a far-off shout. The men were coming! At last, they were coming. They had pickaxes and shovels, and they were running. And when they saw Hans, with his pale face shivering with cold, and his hand tight in the dike, they gave a great cheer,--just as people do for soldiers back from war; and they lifted him up and rubbed his aching arm with tender hands, and they told him that he was a real hero and that he had saved the country.

# Success and Satisfaction

"A runner may come in last but if he beats his own record, he is not a loser."

These words are really a milestone to the strugglers who are still struggling for their aimed destination. Quite true, however sometimes not succeeding fast enough seems to hurt us more than not moving in the right direction! And sometimes it overshadows the happiness that should have accompanied the movement on the right track. We should try to reflect over it and find out a way to get over with this drawback rather than hurting ourselves everytime imperinling the success, satisfaction and the hapiness. The reason for us behaving in such a manner, as I find it, is more rooted in our attitude and approach towards success and sataisfaction. Success and Satisfaction are two words which probably drive or atleast affect behaviours of most of us. It so happened that only a few days back a young boy showed me a sms. It read- "The career is like light and love is like shadow. If one follows shadow he will miss the light and if he follows light, the shadow will automatically follow him. So love your career first."

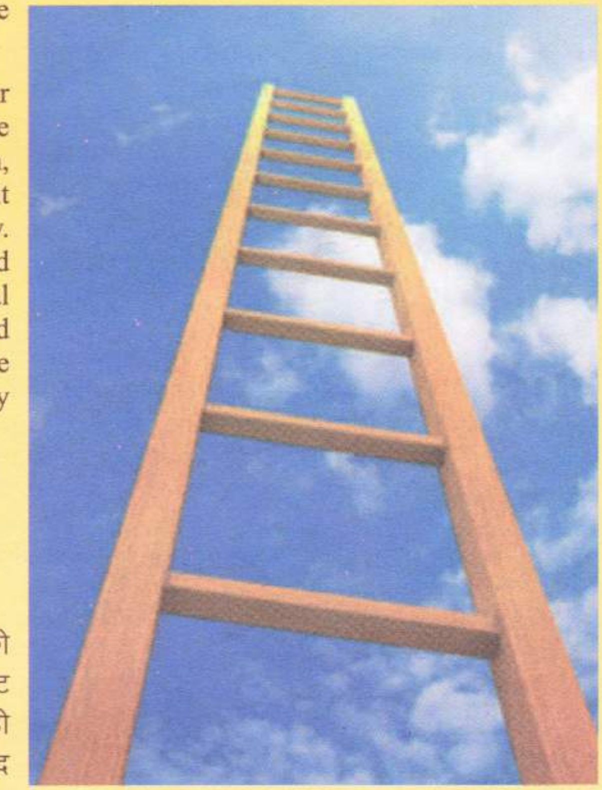

Interestingly the analogy seems to be fitting well in several other contexts. To say that this analogy and the whole idea of relative preference are very much applicable to Success and Satisfaction, will not be an overstatement. So carrying the analogy forward it appears satisfaction is like light and the success is like its shadow. By concentrating just upon success, more often than not, we find something is amiss and guess what? It is satisfaction. It is natural that those who just chase success are seen mostly unsatisfied whereas those who are satisfied though they may earn less, are completely successful. So have(or chase) satisfaction and enjoy your run, success will follow.

*By Muni Shri Anubhav Sagar ji*

# सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं होता

उनकी आगे पढ़ने की मंशा थी, ताकि किसी बहुराष्ट्रीय कम्पनी में अच्छी नौकरी मिल सके। धनवंत कातंबे औरंगाबाद के एक इंस्टीट्यूट में मैनेजमेंट की पढ़ाई कर रहा था। सुधीर फर्ड़े ने डॉ. पंजाब राव यूनिवर्सिटी से हाल ही में स्नातक किया है। दोनों की उम्र 22 वर्ष है और वे स्नातक करने के बाद कोई ऐसा कोर्स करना चाहते थे जो उन्हें छः अंकों वाले वेतन वर्ग में पहुंचा दे। दोनों ही मध्यमवर्गीय परिवार से आते हैं और उनके पास अपनी आगे की पढ़ाई जारी रखने के लिए पर्याप्त पैसा नहीं था।

हालांकि उनका शैक्षणिक रिकॉर्ड बेहतर रहा है। दोनों महाराष्ट्र के गोंदिया जिले से आते हैं। उच्च शिक्षा के अपने सपने को पूरा करने के लिए उनके दिमाग से शीघ्र पैसा कमाने का एक अनूठा विचार आया। उन्होंने सुना था कि चीते की खाल बेचने से काफी पैसा मिल सकता है, जिससे वे अपने मैनेजमेंट प्रोग्राम की फीस चुका सकते हैं। अपने एक मित्र (जिसका नक्सलियों से सम्पर्क था) के जरिए उन्होंने रूपये 30,000/– में चीते की खाल खरीद ली। नक्सलियों ने उनसे मुम्बई के निकट कल्याण में एक व्यक्ति से मिलने के लिए कहा जो उन्हें इसकी मौजूदा बाजार.कीमत देने वाला था। बाजार में इसकी कीमत 25 लाख रूपये थी। बगैर यह समझे कि इसका नतीजा क्या हो सकता है, दोनों इस बेशकीमती सामान को बेचने की खातिर कल्याण के लिए निकल पड़े। रास्ते में फर्ड़े महाराष्ट्र लोक सेवा आयोग की परीक्षा के सपने बुनने लगा तो कादंबे अपने उस कर्ज को चुकाने के बारे में सोचने लगा, जो उसने अपनी मैनेजमेंट की पढ़ाई के लिए लिया था। वास्तव में फर्डे हमेशा से एक पुलिस अधिकारी बनना चाहता था। कल्याण पहुंचने पर पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर उन दोनों को धर दबोचा। आरोप सिद्ध होने पर दोनों को कम से कम तीन साल से लेकर सात साल तक जेल में गुजारने पड़ सकते हैं। गौरतलब है कि इस अवधि में वे अपने पोस्ट ग्रेजुएशन तथा मैनेजमेंट की पढ़ाई कर सकते थे। सफलता के लिए कोई शॉर्टकट नहीं होता।

*-एन. रघुरामन*

दैनिक भास्कर से साभार

# संस्मरण

## आत्मीयता

टड़ा से वापिस लौटकर आचार्य महाराज की आज्ञा से महावीर–जयन्ती सागर मे सानंद सम्पन्न हुई। फिर आदेश मिला कि ग्रीष्मकाल में कटनी पहुँचना है। गर्मी दिनों–दिन बढ़ रही थी। तेज धूप और लम्बा रास्ता, पर मन में गहरी श्रद्धा थी। गुरू के आदेश का पूरे मन से पालन करना ही शिष्यत्व की कसौटी है। आदेश मिलते ही उसी दिन दोपहर में हमने विहार करने का मन बना लिया और सामायिक में बैठ गए। सामायिक से उठकर बाहर आए तो देखा कि आकाश में बादल छा रहे हैं। धूप नम हो गई है। हमनें तुरन्त विहार कर दिया और बड़ी आसानी से शाम होने से पहले लगभग बीस किलोमीटर रास्ता तय कर लिया । फिर तो प्रतिदिन ऐसा ही हुआ। कटनी पहुँचने तक प्रतिदिन दोपहर में बादल छा जाते और हमारी यात्रा आसान हो जाती।

कटनी पहुँचकर जब हमें मालूम पड़ा कि आचार्य महाराज ने दो–तीन बार चिन्ता व्यक्त की कि " आदेश तो हमने दे दिया, पर मई का महीना है, धूप बहुत कड़ी है, विहार में मुश्किल न हो।' तब हम विस्मय और आनन्द से भर गए । इतनी दूर रहकर भी अपने शिष्यों के प्रति आचार्य महाराज की आत्मीयता इतनी सघन है कि पथ में छाया बनाकर वहीं हमें सँभालती रही व शीतलता देती रही। उनकी अनुकम्पा अपरम्पार है। ***कटनी 1989***

## चित्रांकन

उसने कहा –
जीवन में
एक चित्र ऐसा बनाना
कि जिसमें सब ओर
खुला आकाश हो
कि अपनी सीमाएं
स्वयं निर्धारित करता
कोई महासागर हो,
कि अपने ही बनाये
किनारों के बीच
बहती नदी हो,
कि अपने ही हाथों
अपना सर्वस्व लुटाता
एक वृक्ष हो
और समूचे आकाश को
अपने गीतों से
भर देने वाली
कोई चिड़िया हो,

जरूर बनाना
जीवन का ऐसा चित्र,
जिसमें जीवन और जगत के बीच
सीधा संबंध हो।

***-मुनि क्षमासागर जी***

## Painting

He said-please
Paint a canvas
With borders of the sky;
A sea endless
In its own boundary;
A river that flows
Between the two banks
of its own making;
A tree that gives away
With both hands
Its tree-life;also
A bird filling the sky
with its own sweet singing.
Please do make
a painting of life
linking the universe
to life's heartbeat.

***Translated by - Sunita Jain***

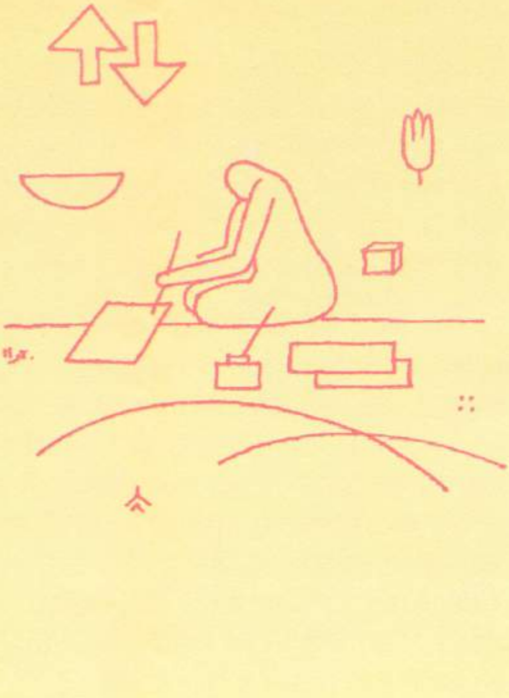

***मुक्ति से साभार***

# आपके पत्र

मैं अपने जीवन की एक घटना बताना चाहूंगी, कुछ महीने पहले परीक्षा के समय मैं बहुत ही निराशा महसूस कर रही थी। मेरा पढ़ाई में मन बिल्कुल ही नहीं लग रहा था। बार–बार प्रयास करने के बाद भी पढ़ाई में concentration नहीं हो रहा था। तभी मुझे वॉर्डन मेडम की आवाज सुनाई दी कि मेरी कोई चिट्ठी या बुक आई है, जिसे मैं ले लूं। चूंकि मैं निराश थी तो मुझे लगा, कि मैंने अभी MAT का एग्जाम दिया है तो किसी छोटे–मोटे कॉलेज से कॉल लेटर आया होगा। पर मैं जैसे ही नीचे पहुंची, टेबल पर मैंने Chirping Sparrow देखा। उसे देखते ही मैं बहुत खुश हुई, क्योंकि यह मेरी पसंदीदा पत्रिका है और समस्याओं का समाधान करने के लिए ज्ञान भी देती है। मैंने उसे पढ़ना शुरू किया और आप आश्चर्य करेंगे कि मुझे अपने सारे प्रश्नों के उत्तर मिल गए जिन्हें मैं ढूंढ रही थी। इसके बाद मैंने लगातार दो घंटे पूरे concentration से पढ़ाई की। और उस विषय में मुझे सर्वाधिक नम्बर आए और पहली बार कॉलेज में अपनी कक्षा में मुझे दूसरी रैंक भी प्राप्त हुई।

मुझे लगता है कि जब Chirping Sparrow से इतनी सारी समस्याओं का समाधान हो गया, तो फिर मुनिश्री के दर्शन से कितना पुण्य अर्जन होगा। मैं Chirping Sparrow का आभार व्यक्त करना चाहती हूँ, क्योंकि मैंने सोचा भी नहीं था कि जो प्रश्न मेरे मन में उठ रहे हैं, और जिनसे मुझे निराशा हो रही है उनके उत्तर तत्काल मुझे मिल जाएंगे। ***अनु बांझल, शिवपुरी***

---

The latest issue of Chirping Sparrow was very nice. It enhanced our knowledge and also succinctly brought out the scientific reasons behind various activities performed in temple. I am thankful to Maitree Samooh for sending Chirping Sparrow and compiling it so well for all of us.

The portion that I liked most was the truth about traditions – the article about "Abhishek". I also have a query in my mind which bothers me a lot. Whenever we go out say on road, or bus or train we see so many beggars and every time someone comes and asks for help, I feel very sorry for him and I want to help but sometimes I don't carry money or I am not in a situation to give money. Also sometimes I face the dilemma that should I give or not as it's generally uncertain that how and for what all purposes one will use the money I am going to give. Apprehensions about the possible misuse of the money make the decision tough at times. I want to know is my thinking correct or shall I stop thinking and help the needy whenever I am in a position to give something. I thought of asking this after reading the story "Sadupyog" in Chirping Sparrow- the story from the life of Iswarchand Vidyasagar.

***Ruchi Jain, Bangalore***

पतंगों से पक्षियों को होने वाले नुकसान से बचाने के लिए मंगलवार को जयपुर में प्रदर्शन करता हुआ पेटा का कार्यकर्ता। उल्लेखनीय है कि हर साल पतंगों से उन पक्षियों को भी नुकसान पहुंचता है जो लुप्त होने की कगार पर हैं। पेटा के कार्यकर्ता इस मिशन के तहत देशभर में प्रदर्शन कर रहे हैं।

राज एक्सप्रेस से साभार

## Young Achievers

विभिन्न क्षेत्रों में प्रतिभा और नैतिक मूल्यों को प्रोत्साहन देने हेतु चर्पिंग स्पेरो के यंग अचीवर्स कॉलम में जैन विद्यार्थियों की जानकारी प्रकाशित की जाती है। आप ऐसे किसी विद्यार्थी की जानकारी, नाम शहर का नाम, उपलब्धियाँ एवं पासपोर्ट साईज का फोटो हमें जरूर भेजें। हमे जानकारी प्रकाशित कर प्रसन्नता होगी ।

Photo By
Ashvary Jain,
Jabalpur

## ऊंची उड़ान

आम से खास बनने की सबकी ख्वाहिश
लेकिन खास क्या चीज है ?
आम, खास बनने की तमन्ना में,
खास को भी आम कर देता है।
आम जब खास से मिलता है तो
खुद को भी खास समझता है।
आम को संतोष नहीं है अपने से
मेरी समझ में –
आम और खास में
है नहीं कोई विशेष अन्तर
ये तो फर्क है समझ का
कोई किसी को आम लगता
तो किसी को खास
ये तो मन की कोरी कल्पना है
चपल चंचल कपोल मन की
ऊंची उड़ान है।

***सुरजीत जैन, सागर***

## मेरे ईश्वर

ऐ मेरे ईश्वर! अब तू ही कुछ बोल
मेरे देश की नैया है डाँवाडोल
चारों तरफ खून की नदियाँ बह रहीं
नौजवानों की जवानियाँ चुपचाप सो रहीं
नेता अपनी कर्त्तव्य–पटरी से खिसक रहे
नवयुवक अपने मार्ग से भटक रहे
हर तरफ लूट साम्प्रदायिक झगड़े क्यों है?
सब आशियाँ वीरान उजड़े क्यों है?
अब तो तू ही इस मामले में दखल दे
मेरे देश की स्थिति को बदल दे
मिला दे तू उनको कि बन जाये एकता की मिसाल।
हर जहाँ से बढ़कर रहे मेरा भारत विशाल।।

***अनुराग जैन, गंजबासौदा***

# महत्त्वपूर्ण चिट्टी

## देशभक्ति

हैनरी हॉलैन्ड के एक छोटे से गांव में रहता था। सात वर्षीय हैनरी कभी स्कूल नहीं गया था। प्रतिदिन सुबह वह अपने बाकी चरवाहे दोस्तों के साथ भेड़ें चराने जाया करता था। जिस किसी दिन वह अपने घर से थोडा पहले निकल आता था तो वह अपनी भेडो को लेकर गांव के किनारे वाले स्कूल के दरवाजे पर अपने बाकी दोस्तों का इन्तजार किया करता था। वह बच्चों और मैड़म की बातों को बडी गौर से सुनता था। यूं बाहर खडे–खडे उसने कुछ अच्छी चीजें सीखी थीं।

आज सर्दी कुछ ज्यादा ही तेज थी, पर हैनरी घर से जल्दी ही निकल आया था। रास्ते में उसे ठण्ड से ठिठुरता एक खरगोश का बच्चा दिखाई दिया। हैनरी को उस पर दया आ गई। उसने उसे अपनी पोटली में से कुछ खाना खिलाया और अपने कोट में दुबका लिया। हैनरी गेट पर खडा होकर बच्चो को देखने लगा। आज अचानक बच्चे प्रार्थना के बाद राष्ट्रगान गाने लगे। हैनरी ने स्कूल की मैड़म से सुना था कि राष्ट्रगान के समय सावधान होके खड़ा होना चाहिए। हैनरी ने झट से खरगोश को अपनी शर्ट की जेब में रखा और बाकी बच्चो की तरह खड़ा हो गया। इस बीच जेब में खरगोश उथल–पुथल मचाने लगा। उसके तीखे पंजो से हैनरी के सीने पर गहरी चोटें लगने लगी पर हैनरी बिना हिले खडा रहा। उसके पूरे कपडे खून से तरबतर हो गए पर वह हिला तक नहीं। खून से तरबतर हैनरी को देख मैडम तेजी से दौडते हुए उसके पास आईं और खरगोश को बाहर निकाल कर उसकी चोटों पर दवा लगाई। अपने राष्ट्रगान का सम्मान करने वाले बहादुर हैनरी की सबने भरपूर तारीफ की।